# राजस्थान में लिंगानुपात का चयनित जिलों के संदर्भ में अध्ययन

**प्रियंका * अल्का चौधरी ****

*शोध छात्रा, एम.फिल भूगोल, भू–विज्ञान विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई (राजस्थान), भारत

**शोध छात्रा, एम.फिल भूगोल, भू–विज्ञान विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई (राजस्थान), भारत

***सारांशरू लिंग संरचना किसी भी देश में पुरुषों और महिलाओं के बीच संतुलन को संदर्भित करती है। यह जनसांख्यिकीय प्रक्रिया को प्रभावित नहीं करता, बल्कि किसी भी देश की सामाजिक आर्थिक क्रियाओं को निर्धारित करता है। देश में पुरुष एवं महिला अनुपात में नकारात्मक परिवर्तन किसी भी राष्ट्र के विकास में बाधा पंहुचा सकता है। देश में ऐसे बहुत से राज्य एवं जिले हैं जहां लड़की को बोझ समझा जाता है। ऐसे स्थान पर लिंगानुपात का गिरता स्तर देखने को मिलता है। हरियाणा राज्य इसका उदाहरण है, जहां लिंगानुपात का निम्न स्तर देखने को मिलता है। राजस्थान राज्य में भी गिरता शिशु लिंगानुपात एक बहुत बड़ी समस्या के तौर पर उभर रहा है। जिसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि 2001 में यहाँ शिशु लिंगानुपात 909 था जो 2011 में घटकर 888 तक पहुंच गया है। वहीँ कूल लिंगानुपात में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए है, यहाँ 2001 में कुल लिंगानुपात 921 था जो 2011 में बढ़कर 928 हो गया है। इस आधार पर अध्ययन करें तो शिशु लिंगानुपात में नकारात्मक एवं कुल लिंगानुपात में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। समय पर सरकार द्वारा किये जा रहे परिवर्तनों के चलते धीरे धीरे इस दिशा में परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य लगातार गिरते शिशु लिंगानुपात के स्तर को ऊँचा उठाना है एवं चयनित जिलों में लिंगानुपात की संरचना का अध्ययन प्रस्तुत करना है।***

***संकेताक्षर :– लिंगानुपात, लिंग संरचना, राजस्थान राज्य।***

---

परिचय

प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंगानुपात कहते हैं। यह समुदाय के सामाजिक–आर्थिक संबंधों को निर्धारित करता है। लिंगानुपात किसी भी प्रदेश की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी जनसंख्या में सभी आयु वर्गों में पुरूषों एवं स्त्रियों के अनुपात को लिंगानुपात कहते हैं। (ओझा रघुनाथ, 2009). भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। आज़ादी पाने के बाद भारत ने बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति की है। परन्तु फिर भी यहाँ लिंगानुपात में नकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। यदि जनगणना 2001 के आंकड़ों के आधार पर अध्ययन करें तो भारत का कुल लिंगानुपात 933 था जो 2011 में 943 हो गया है। लिंगानुपात में भारत का यह एक सफल कदम माना जाता है। वहीँ शिशु लिंगानुपात में यहाँ नकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। 2001 के जनगणना आंकड़ों के अनुसार यहाँ का शिशु लिंगानुपात 927 था जो 2011 में घटकर 919 तक पहुँच गया है। राजस्थान राज्य में भी गिरता हुआ शिशु लिंगानुपात एक बहुत बड़ी समस्या के तौर पर उभर रहा है। जिसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि 2001 में यहाँ शिशु लिंगानुपात 909 था जो 2011 में घटकर 888 तक पहुंच गया है। वहीँ कुल लिंगानुपात में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए है, यहाँ 2001 में कुल लिंगानुपात 921 था जो 2011 में बढ़कर 928 हो गया है। लिंगानुपात में परिवर्तन कि यही प्रक्रिया राजस्थान के चयनित जिलों में भी देखी जा सकती है।
(स्त्रोत :– भारत की जनगणना, 2011)

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. राजस्थान राज्य के चयनित जिलों में कुल लिंगानुपात की जानकारी प्रस्तुत करना।
2. राजस्थान राज्य के चयनित जिलों में शिशु लिंगानुपात की जानकारी प्रस्तुत करना।
3. चयनित जिलों में लिंगानुपात की सकारात्मक एवं नकारात्मक रूपरेखा को प्रस्तुत करना।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

1. विजय कुमार तिवारी ने अपनी पुस्तक 'भारत का जनसंख्या भूगोल' में जनसंख्या के विविध पहलुओ को बड़े अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। इन्होने अपनी पुस्तक में आयु लिंगानुपात शिक्षा साक्षरता भारतीय जनसंख्या का नगरीय–ग्रामीण अनुपात तथा भाषा व धार्मिक संरचना की व्याख्या की है। (तिवारी विजय कुमार,1997).
2. हीरालाल ने अपनी पुस्तक 'जनसंख्या भूगोल' जनसंख्या समस्याओ की जानकारी प्राप्त कर उनके संभावित समाधान प्रस्तुत करते हुए जनसंख्या के विभिन्न पक्षो का प्रस्तुतीकरण किया है। ( हीरालाल, 2000).
3. बी. पी. पंडा ने अपनी पुस्तक 'जनसंख्या भूगोल' में जनसंख्या वितरण, घनत्व, वृद्धि, स्थानान्तरण, जैव शारीरिक विशेषताएँ, ग्रामीण–नगरीय आवास, व्यावसायिक संरचना, जनसंख्या व संसाधन संबंध आदि पक्षो को प्रस्तुत किया है। ( पंडा, बी. पी, 2001).

अध्ययन क्षेत्र

भारत के उत्तर–पश्चिम भाग मे ं स्थित राजस्थान प्रदेश विषम चतुर्भुजाकार आकृति में है। राजस्थान का भौगोलिक क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है। अविस्थति के आधार पर राजस्थान देश का उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर सजग प्रहरी है। 23°3′ उत्तरी अक्षांश से 30°12′ उत्तरी अक्षांश तथा 69°30′ पूर्वी देशान्तर से 78°17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित इस प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 3 लाख 42 हजार 239 वर्ग किलोमीटर है। राजस्थान प्रदेश की उत्तर से दक्षिण में अधिकतम लम्बाई 826 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम में अधिकतम लम्बाई 869 किलोमीटर है। यह विशाल भू–भाग पूरे देश का लगभग दसवां भाग है। इसे क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य होने का गौरव प्राप्त है। राजस्थान की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सीमा अत्यधिक विस्तार लिए हुए है। इसकी 1070 किलोमीटर लम्बी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से लगी हुई है। राजस्थान की लगभग 4850 किलोमीटर सीमा देश के विभिन्न प्रान्तों से मिलती है। पूर्वी सीमा पर उत्तर प्रदेश, उत्तरी सीमा पर पंजाब एव हरियाणा, दक्षिणी सीमा पर गुजरात, दक्षिणी–पूर्वी सीमा पर उत्तरप्रदेश एव मध्यप्रदेश प्रान्त स्थित है। यहाँ प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के उत्तरी– पूर्वी क्षेत्रों भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर, करोली, धौलपुर, दौसा, जयपुर, अलवर, सीकर एवं भरतपुर जिलों में अनुकूल जलवायु पाया जाती है। इन जिलो में वार्षिक ऋतु चक्र में गर्मी, सर्दी एवं वर्षा ऋतु प्रमुख है। शीत ऋतु अक्टूबर माह से प्रारम्भ होकर फरवरी माह के अन्त तक रहती है, जिसमें जनवरी माह सर्वाधिक ठण्डा महीना होता है। शीत ऋतु में शीत लहरें चलती हैं तथा तापमान न्यनूतम 3.6 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है। साथ ही इस समय गहन कोहरे की स्थिति भी जन–जीवन को प्रभावित करती है। इस ऋतु में उत्तरी भागों से उत्तरी–पूर्वी हवाऐं प्रवाहित होती है तथा दूसरी तरफ पश्चिम की ओर से आने वाले शीतकालीन चक्रवात इन जिलों में प्रवेश करते है। दिसम्बर–जनवरी माह में चक्रवातों से कुछ वर्षा होती है जिसे ''मावठ'' कहा जाता है। इस मावठ को ''गोल्डन ड्रोप्स'' की सज्ञां दी गई है, क्योंकि यह रबी फसलों के लिए अमृत के समान है।

मानचित्र 1. राजस्थान राज्य में चयनित जिलों की अवस्थिति

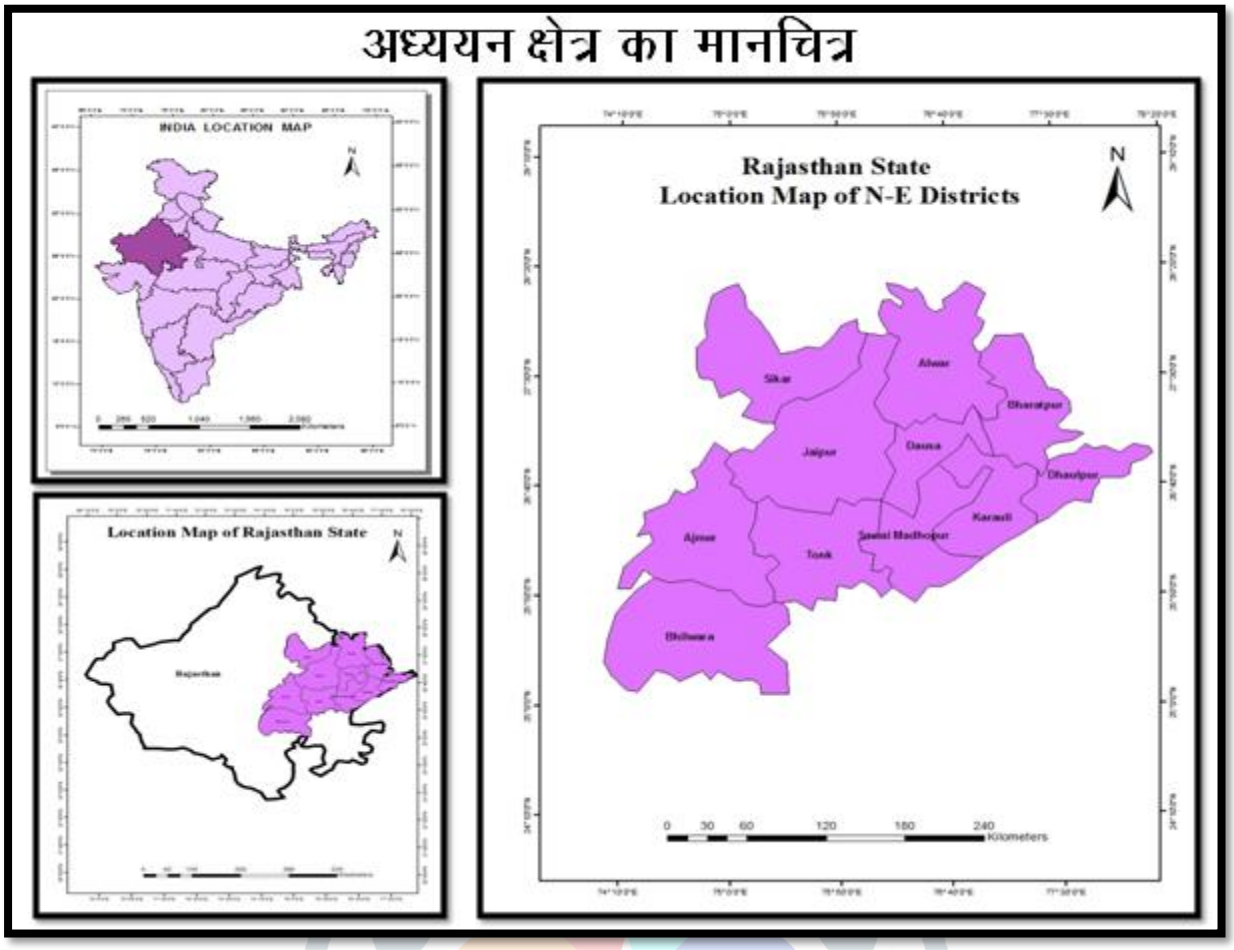


स्त्रोत :– भारत की जनगणना, 2011

आंकडा एकत्रीकरण एवं शोध प्रविधि

सामान्यतः शोध प्रविधि प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का संग्रह होती है, यहाँ प्रस्तुत शोध अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों में जिला जनगणना विभाग पुस्तिका, अखबार, पत्रिकाएं, पुस्तकें, संगणकजाल, प्रकाशित एवं अप्रकाशित पत्रों का प्रयोग किया गया है। कुल लिंगानुपात एवं शिशु लिंगानुपात का वर्णन प्रस्तुत करने के लिए जनगणना विभाग के आंकडों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत हेतु मानचित्रीकरण विधि एवं रेखाचित्रीय विधि को अपनाया गया है। मानचित्रीकरण के लिए ARC GIS 10.2 सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है।

परिणाम

लिंगानुपात के अध्ययन के बिना जनांकिकी से सम्बंधित किसी भी अध्ययन को पूर्ण नहीं कहा जा सकता। लिंगानुपात अलग अलग देशें में अलग अलग हो सकता है, यदि हम भारत देश का भी अध्ययन करें तो यहाँ भी लिंगानुपात में काफी असमानता है। लिंगानुपात में असमानता को ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों में देखा जा सकता है। राजस्थान राज्य के उत्तर पूर्वी जिले अन्य जिलों की तुलना में घने बसे हुए हैं। परंतु उचित जागरूकता के अभाव के कारण यहाँ लिंगानुपात में काफी असमानताएं विदयमान हैं जिन पर उचित ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है। जिसका वर्णन इस प्रकार है।

सारणी 1. भारत/राजस्थान/जिलों में कुल लिंगानुपात एवं शिशु लिंगानुपात परिवर्तन
(प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या) (2001–2011)

| देश/राज्य /जिला | कुल लिंगानुपात (2001) | कुल लिंगानुपात (2011) | कुल लिंगानुपात में परिवर्तन (2001–2011) | शिशु लिंगानुपात (1991) | शिशु लिंगानुपात (2001) | शिशु लिंगानुपात में परिवर्तन (1991–2001) | शिशु लिंगानुपात (2011) | शिशु लिंगानुपात में परिवर्तन (2001–2011) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भारत | 933 | 943 | + 10 | 945 | 933 | –12 | 919 | –14 |
| राजस्थान | 921 | 928 | + 7 | 916 | 909 | –7 | 888 | –21 |
| भीलवाडा | 962 | 973 | +11 | 953 | 949 | –4 | 928 | –21 |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अजमेर | 931 | 951 | +20 | 913 | 922 | +9 | 901 | −21 |
| टोंक | 934 | 952 | +18 | 931 | 927 | −4 | 892 | −35 |
| सवाई माधोपुर | 889 | 897 | +8 | 894 | 902 | +8 | 871 | −31 |
| करोली | 855 | 861 | +6 | 873 | 873 | 0 | 852 | −21 |
| धौलपुर | 827 | 846 | +19 | 875 | 860 | −15 | 857 | −3 |
| दौसा | 899 | 905 | +6 | 919 | 906 | −13 | 865 | −41 |
| जयपुर | 897 | 910 | +13 | 925 | 899 | −26 | 861 | −38 |
| अलवर | 886 | 895 | +9 | 914 | 887 | −27 | 865 | −22 |
| सीकर | 951 | 947 | −4 | 904 | 885 | −19 | 848 | −37 |
| भरतपुर | 854 | 880 | +26 | 879 | 879 | 0 | 869 | −10 |

स्त्रोत :– भारत की जनगणना, 2011

राजस्थान राज्य के चयनित जिलों के कुल लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन (2001–2011)

मानचित्र 2 एवं 3. कुल लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन (2001–2011)

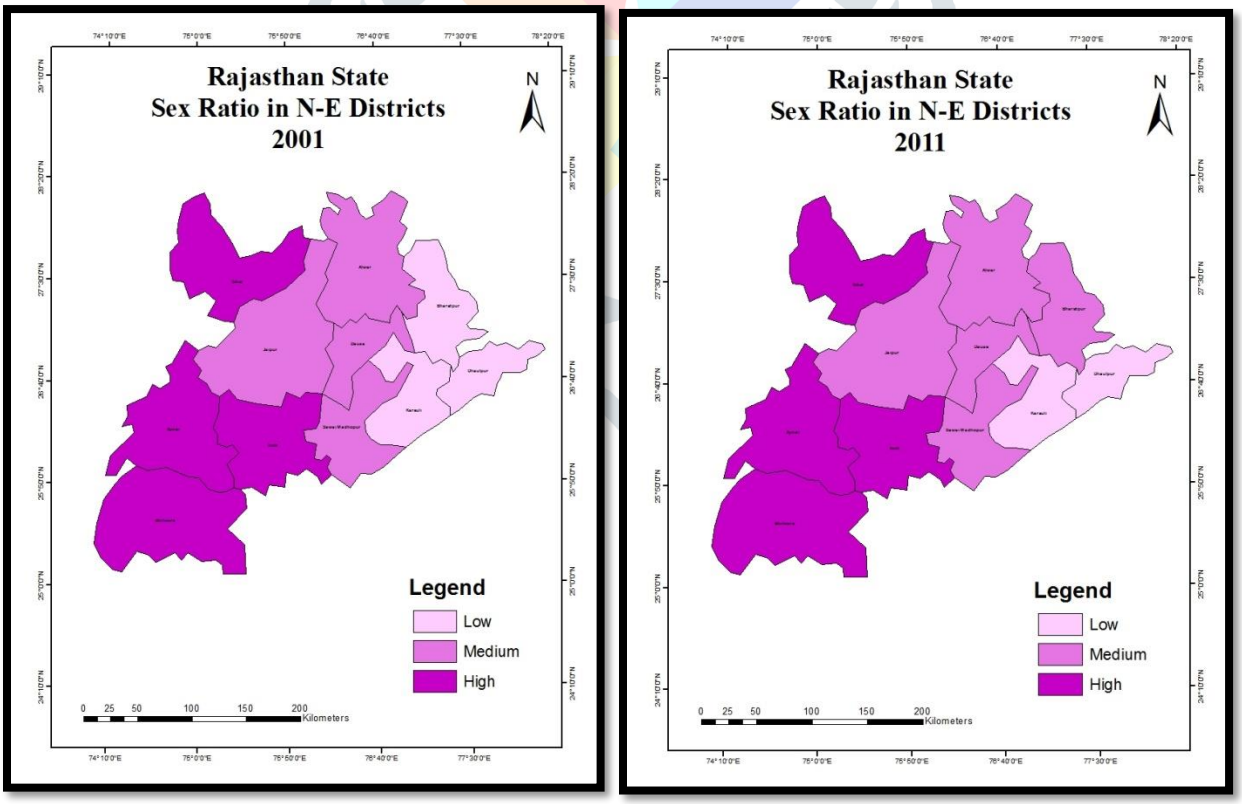


स्त्रोत :– भारत की जनगणना, 2011

आरेख 1. कुल लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन (2001–2011)

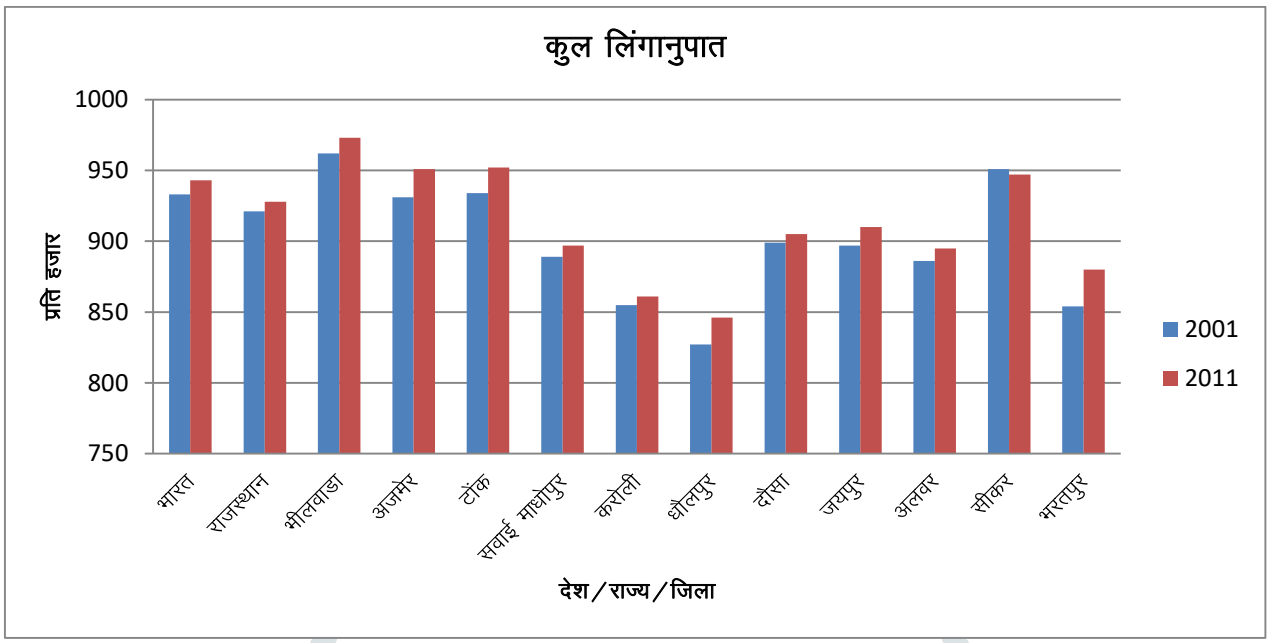


स्त्रोत :– भारत की जनगणना, 2011

प्रस्तुत मानचित्र एवं रेखाचित्र से स्पष्ट है कि राजस्थान राज्य के चयनित जिलों में कुल लिंगानुपात में असमानताओं का अध्ययन किया गया है। यदि जनगणना 2001 के आंकडों के आधार पर अध्ययन करें तो अधिकतम लिंगानुपात वाले जिलों में टोंक, भीलवाडा, अजमेर एवं सीकर बहुत अधिक लिंगानुपात वाले जिलों की श्रेणी में आते थे। वहीं मध्यम लिंगानुपात वाले जिलों में जयपुर, अलवर, दौसा एवं सवाई माधोपुर जिलों में भी अधिकतम लिंगानुपात विद्यमान था। जबकि भरतपुर, करौली एवं धौलपुर में न्यूनतम लिंगानुपात दर्ज किया गया। वहीं 2011 के आंकडों के आधार पर अधिकतम लिंगानुपात वाले जिलों में अजमेर, टोंक, भीलवाडा एवं सीकर शामिल थे। मध्यम लिंगानुपात वाले जिलों में दौसा, सवाई माधोपुर, अलवर, भरतपुर एवं जयपुर प्रमुख हैं। जबकि करौली एवं धौलपुर में लिंगानुपात न्यूनतम दर्ज किया गया है। इस आधार पर देखें तो भरतपुर जिले में लिंगानुपात में परिवर्तन देखने को मिला है।

राजस्थान राज्य के चयनित जिलों के शिशु लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन (1991)

मानचित्र 4. शिशु लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन (1991)

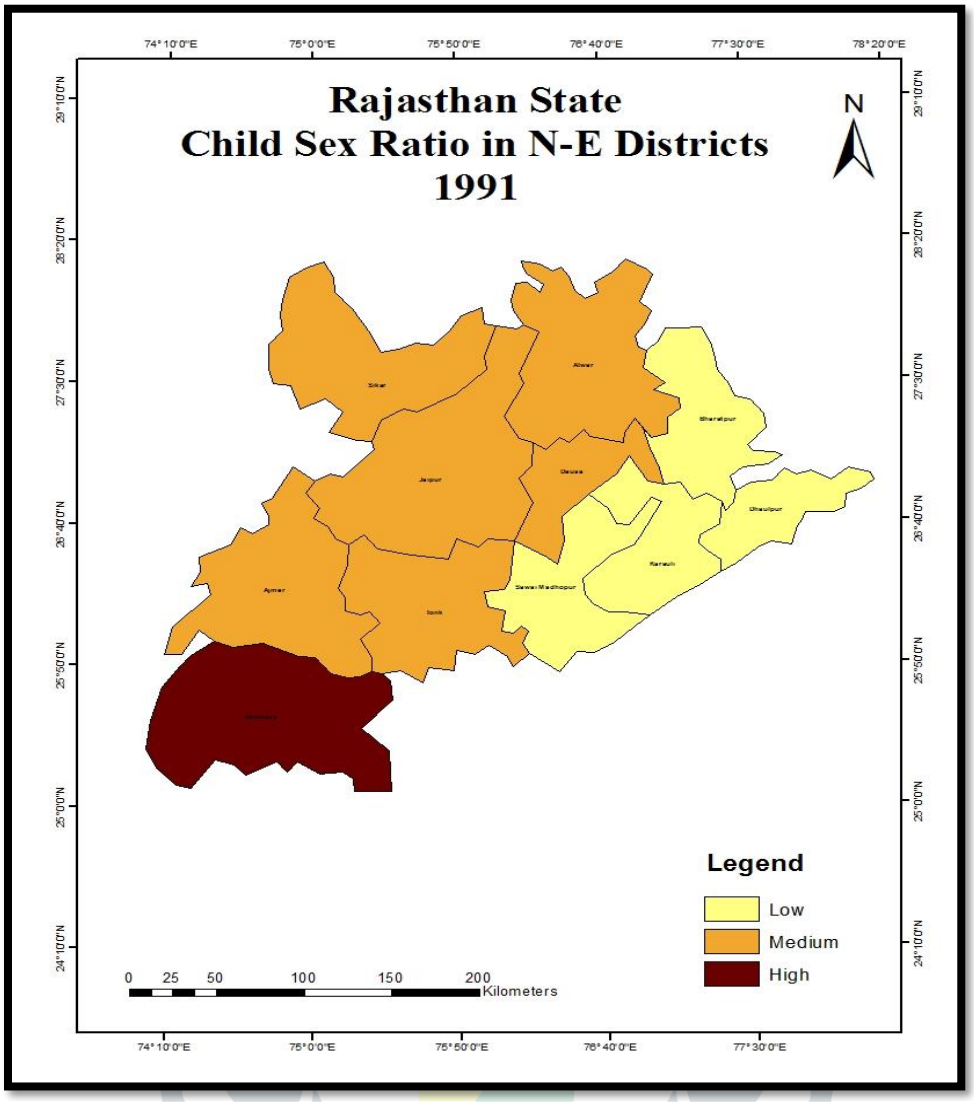


स्त्रोत :– भारत की जनगणना,1991

मानचित्र 5 एवं 6. शिशु लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन (2001–2011)

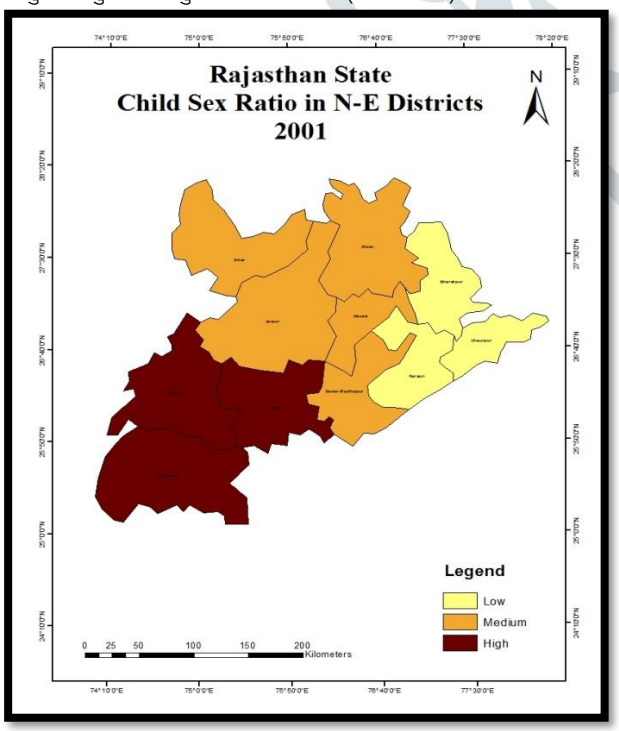


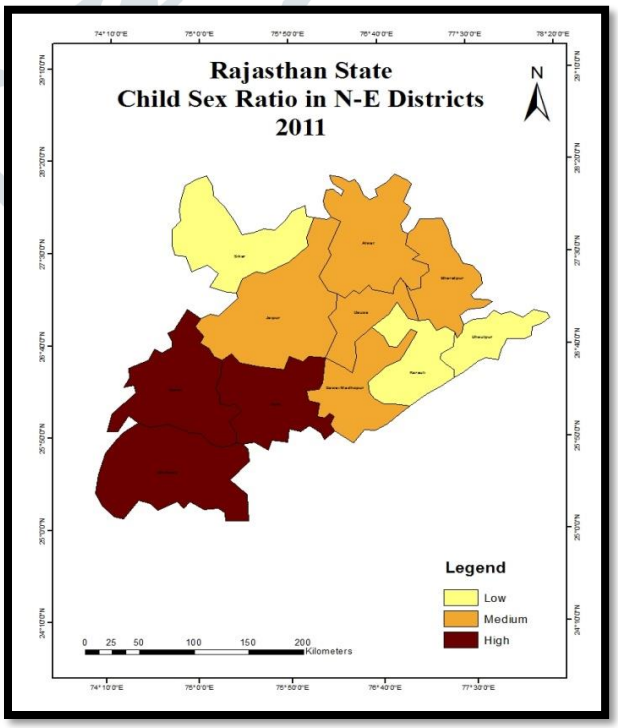

स्त्रोत :– भारत की जनगणना, 2001 – 2011

आरेख 2. शिशु लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन (1991 – 2011)

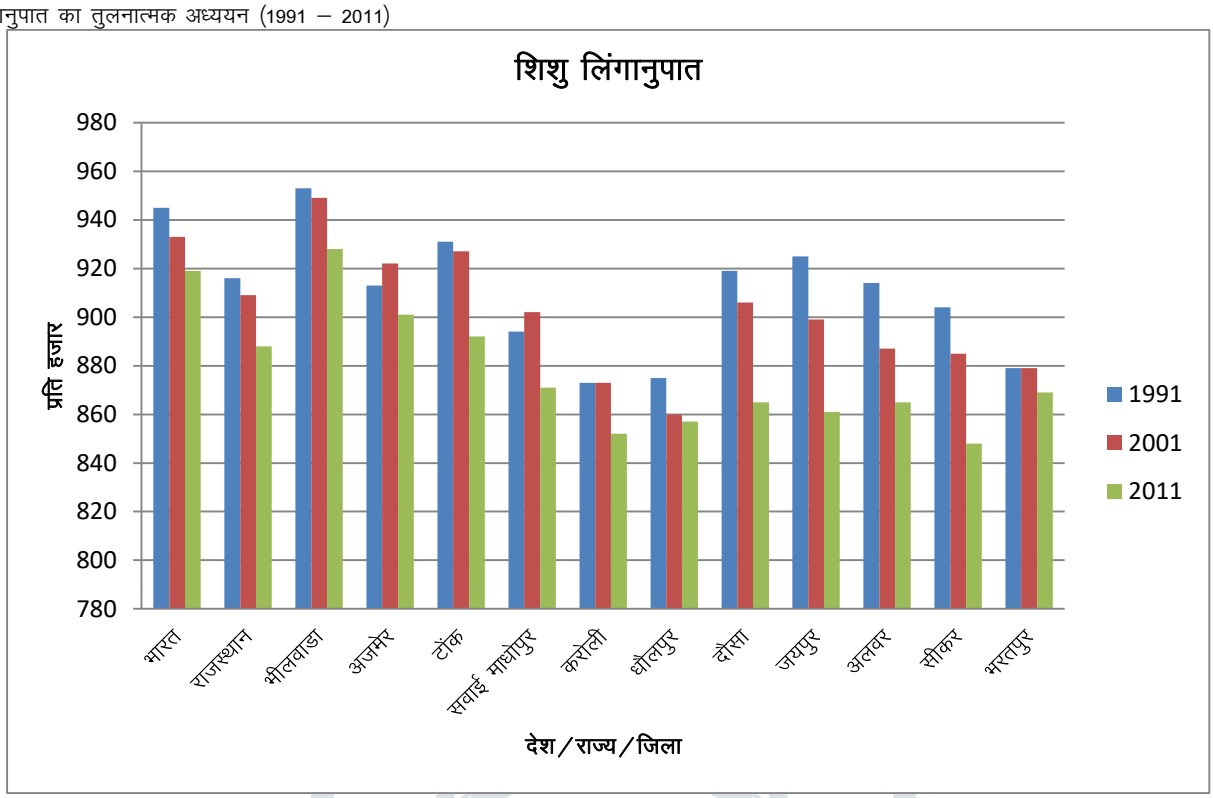


स्त्रोत :– भारत की जनगणना, 1991 – 2011

प्रस्तुत मानचित्रों एवं रेखाचित्रों से स्पष्ट है कि राजस्थान राज्य के चयनित जिलों में कुल लिंगानुपात में असमानताओं का अध्ययन किया गया है। यदि जनगणना 1991 के आंकडों के आधार पर अध्ययन करें तो अधिकतम लिंगानुपात वाले जिलों में भीलवाडा अधिकतम लिंगानुपात वाले जिलों की श्रेणी में आता था। वहीं मध्यम लिंगानुपात वाले जिलों में जयपुर, अलवर, दौसा, सीकर, अजमेर एवं टोंक जिलों में भी अधिकतम लिंगानुपात विद्यमान था। जबकि सवाई माधोपुर, भरतपुर, करौली एवं धौलपुर में न्यूनतम लिंगानुपात दर्ज किया गया। वहीं 2001 के जनगणना आंकडों के आधार पर अधिकतम लिंगानुपात वाले जिलों में अजमेर, टोंक एवं भीलवाडा शामिल थे। मध्यम लिंगानुपात वाले जिलों में दौसा, सवाई माधोपुर, अलवर, सीकर एवं जयपुर प्रमुख हैं। जबकि करौली, भरतपुर एवं धौलपुर में लिंगानुपात न्यूनतम दर्ज किया गया है। इस आधार पर देखें तो अजमेर, टोंक एवं सवाई माधोपुर जिलों में लिंगानुपात में परिवर्तन देखने को मिला है। यदि जनगणना 2011 के आंकडों के आधार पर अध्ययन करें तो अधिकतम लिंगानुपात वाले जिलों में अजमेर, टोंक एवं भीलवाडा शामिल थे। मध्यम लिंगानुपात वाले जिलों में दौसा, सवाई माधोपुर, अलवर, भरतपुर एवं जयपुर प्रमुख हैं। जबकि करौली, सीकर एवं धौलपुर में लिंगानुपात न्यूनतम दर्ज किया गया है। इस आधार पर देखें तो सीकर एवं भरतपुर जिलों में लिंगानुपात में परिवर्तन देखने को मिला है। भरतपुर जिले में सकारात्मक एवं सीकर जिले में नकारात्मक परिवर्तन दर्ज किए गए हैं।

सुझाव

लिंगानुपात में सुधार के लिए कुछ प्रमुख बातों पर ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है। लिंग–चयनात्मक तकनीक जैसे अल्ट्रासाउंड आदि का अवैध उपयोग को रोका जाना चाहिएं। पूर्व संकल्पना और प्री–नेटाल डायग्नोस्टिक में उच्च स्तर की सजा के साथ कानूनों की समीक्षा की जाए। समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए समय–समय पर संगोष्ठि और कार्यशालाएँ आयोजित करवाई जाएं। बेटी के जन्म पर प्रोत्साहन देना एवं बेटे की प्राथमिकता के अंतर को कम किया जाना चाहिएं। महिलाओं को नौकरी प्राप्त करने के लिए बराबर अवसर प्रदान किए जाएं, साथ ही आधुनिकीकरण में लड़कियों के लिए सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिएं। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय एवं उच्च शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रमों को शामिल करना जिससे समाज में लड़कियों के महत्व मे समझा जा सके एवं लिंग भेद को समाप्त किया जा सके। इसके अतिरिक्त समाज में कन्याओं के महत्व को बताने हेतु नुक्कड़ नाटक या सभाओं आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि भारत देश में लिंगानुपात को बढ़ाने की अत्यन्त आवश्यकता है। पिछले कुछ दशकों में भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे सर्वशिक्षा अभियान, राष्ट्रीय साक्षरता अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, मिड डे मील, आपकी बेटी हमारी बेटी, बेटी के साथ सेल्फी, कन्या कोष, पीसीपीएनडीपी जैसे अभियानों के कारण धीरे धीरे पुरुष एवं महिला के मध्य असमानता को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। इन अभियानों के चलते महिला साक्षरता में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं। परंतु पुरुष एवं महिला के मध्य अंतर अभी भी विद्यमान है जिसका प्रमुख कारण समाज का स्त्री के प्रति दृष्टिकोण है जिसको परिवर्तित किये जाने की अत्यन्त आवश्यकता है। पुरुष महिला असमानता एक सामाजिक समस्या है जिसको समाप्त करने के लिए सरकार के ही नहीं वरन पूरे समाज के सहयोग की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

(हिन्दी ग्रंथ सूची )

1. कुमार प्रमीला, (2010), ''मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन'', विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली
2. बंसल.सुरेश चन्द्र.(2009),नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन,मेरठ
3. मौर्य एस. डी.(2009),जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन.इलाहाबाद
4. सिंह.इंदिरा.(2008),विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली

(अंग्रेजी ग्रंथ सूची)

1. Annual Report.(2010-2011),Career Point Infosystems Limited
2. Chandana, R. C. , (2000), Geography of Population: Concepts, Deterinants & Patterns, Kalyani Publishers, 56.
3. Heeralal. (2000), "Population Geography", Research Front , 2(1): 29-34.
4. http://censusindia.gov.in/
5. http://censusindia.gov.in/2011census/dchb/0812_PART_B_DCHB_JAIPUR.pdf
6. http://saar.raj.nic.in/

7. National Report, (1982), Third Asian & Pacific Population Frence, Colambo, Shri lanka.20-29 Sep.
8. Panda, B. P. (2001), "Population Geography", Ashish Publishing House, New Delhi, 28.
9. Tiwari, V. K. (1997),"Population Geography of India", Himalaya Publishing House, Mumbai, 68-70.
10. Vidal.J.(2010),World's biggest cities merging into 'mega regions',The guardian.